[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7604 **L**

Unique Paper Code : 2053100023

Name of the Paper : Godaan

Name of the Course : B.A Hons. Hindi - DSE

Semester : VIII

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश.

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12×3 = 36)

(क) महाराज ! संसार में गऊ बनने से काम नहीं चलता। जितना दबो उतना ही लोग दबाते हैं। थाना-पुलिस, कचहरी अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए; लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों तरफ़ लूट है। जो गरीब है, बेकस है, उसकी गरदन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं। भगवान न करे कोई बेईमानी करे। यह बड़ा पाप है; लेकिन अपने हक़ और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है। तुम्हीं सोचो, आदमी कहाँ तक दबे ? यहाँ तो जो किसान है, वह सबका नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे, तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और क़ानिसिटिबिल तो जैसे उसके दामाद हैं, जब उनका दौरा गाँव में हो जाये, किसानों का धरम है कि वह उनका आदर-सत्कार करें, नजर-नयाज दें, नहीं एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बंध जाये।

(ख) अवश्य ही उसमें कोई सिद्धि है और यह उसकी तपस्या का, उसकी कर्मण्य मानवता का ही वरदान है। मालती नारीत्व के उस ऊँचे आदर्श पर पहुँच गयी थी, जहाँ वह प्रकाश के एक नक्षत्र-सी नज़र आती थी। अब वह प्रेम की वस्तु नहीं, श्रद्धा की वस्तु थी। अब वह दुर्लभ हो गयी थी और दुर्लभता मनस्वी आत्माओं के लिए उद्योग का मंत्र है। मेहता प्रेम में जिस सुख की कल्पना कर रहे थे, उसे श्रद्धा ने और भी गहरा, और भी स्फूर्तिमय बना दिया। प्रेम में कुछ मान भी होता है, कुछ महत्त्व भी। श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को

ही अपना इष्ट बना लेती है। प्रेम अधिकार कराना चाहता है, जो कुछ देता है, उसके बदले में कुछ चाहता भी है। श्रद्धा का चरम आनन्द अपना समर्पण है, जिसमें अहम्मन्यता का ध्वंस हो जाता है।

(ग) मेरे घर का क्या खर्च है, यह शायद आप जानते हैं। तो क्या मेरे घर में रुपये फलते हैं ? आयेगा तो आसामियों ही के घर से। आप समझते होंगे, जमींदार और ताल्लुकेदार सारे संसार का सुख भोग रहे हैं। उनकी असली हालत का आपको ज्ञान नहीं; अगर वह धर्मात्मा बन कर रहें, तो उनका जिन्दा रहना मुश्किल हो जाये। अफ़सरों को गालियाँ न दें, तो जेलखाना घर हो जाये। हम बिच्छू नहीं हैं कि अनायास ही सबको डंक मारते फिरें। न गरीबों का गला दबाना कोई बड़े आनन्द का काम है; लेकिन मर्यादाओं का पालन तो करना ही पड़ता है। जिस तरह आप मेरी रईसी का फ़ायदा उठाना चाहते हैं, उसी तरह और सभी हमें सोने की मुर्गी समझते हैं। आइए मेरे बेगले पर तो दिखाऊँ कि सुबह से शाम तक कितने निशाने मुझ पर पड़ते हैं।

(घ) संस्कृति में सदैव आदान-प्रदान होता आया है; लेकिन अन्धी नकल तो मानसिक दुर्बलता का ही लक्षण है। पश्चिम की स्त्री आज गृह-स्वामिनी नहीं रहना चाहती। भोग की विदग्ध लालसा ने उसे उच्छृंखल बना दिया है। वह अपनी लज्जा और गरिमा को जो उसकी सबसे बड़ी विभूति थी, चंचलता और आमोद-प्रमोद पर होम कर रही है। जब मैं वहाँ की सुशिक्षित बालिकाओं को अपने रूप का, या भरी हुई गोल बाहों या अपनी नग्नता का प्रदर्शन करते देखता हूं, तो मुझे उन पर दया आती है। उनकी लालसाओं ने उन्हें इतना पराभूत कर दिया है कि वे अपनी लज्जा की भी रक्षा नहीं कर सकतीं । नारी की इससे अधिक और क्या अधोगति हो सकती है?

प्रश्न 2. हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद की भूमिका का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (18)

अथवा

"हिंदी उपन्यास में कृषक जीवन का चित्रण भारतीय समाज की वास्तविकता को प्रकट करता है" इस कथन के आलोक में कृषक जीवन पर आधारित उपन्यासों में गोदान की स्थिति का चित्रण कीजिए ।

प्रश्न 3. "गोदान के पात्रों की शक्ति उसकी मानवीय जटिलता और स्वाभाविकता में है"- इस कथन के आलोक में उपन्यास की पात्र योजना पर प्रकाश डालिए । (18)

अथवा

गोदान की कथा योजना में यथार्थ और आदर्श के समन्वय पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4. होरी और धनिया के संवादों के आधार पर गोदान की संवाद-योजना का विश्लेषण कीजिए। (18)

अथवा

'गोदान' की भाषा-शैली की विशेषताओं का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।